विश्व हिंदी पत्रिका
2021

विश्व हिंदी सचिवालय
मॉरीशस

विश्व हिंदी पत्रिका
2021

संपादक
डॉ. माधुरी रामधारी

विश्व हिंदी सचिवालय
इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423,
मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Independence Street, Phoenix 73423,
Mauritius

info@vishwahindi.com
वेबसाइट / Website : www.vishwahindi.com
फ़ोन / Phone : +230-6600800

ISSN No. : 1694-2477

निवेदन

विश्व हिंदी पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचार लेखकों के अपने हैं।
विश्व हिंदी सचिवालय और संपादक मंडल का उनके विचारों से सहमत होना
आवश्यक नहीं है।

पृष्ठ सज्जा

आर. एस. प्रिंट्स

कवर डिज़ाइन

काटे प्रिंटिंग लिमिटेड, मॉरीशस

स्टार पब्लिकेशंस प्रा. लि., 4/5 बी, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-110002 (भारत) द्वारा प्रकाशित

अनुक्रम

हिंदी : उद्‌भव एवं विकास

हिंदी : लिपि, साहित्य एवं संस्कृति

हिंदी का ई-संसार और जन-माध्यम

हिंदी-शिक्षण

रामायण और रामचरितमानस : विश्व के पाँचों भूखंडों में

-प्रो. विजयकुमारन सी.पी.वी
केरल, भारत

वाल्मीकि (कहीं ब्रह्मा) से विरचित व नारद, शिव-पार्वती, ऋषि-मुनि तथा तुलसीदास परंपरा तक पक्षीगण, कवि-भक्त की मौखिक परंपरा में स्मृति रूप में ब्रह्मांड में परिव्याप्त रामायण की मूल भाषा संस्कृत और अन्यान्य देश-विदेश की भाषाएँ होती हैं। बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में इनके लौकिक, साहित्यिक और साहित्येतर विहायस में उड़ान भरते हुए, कई स्वीकृतियाँ हुईं। मूल रामायण (400 ई.पू.–400 ई.) का पाठानुसंधान अब भी चल रहा है ताकि उसकी एकरूपता प्राप्त हो तथा दुनिया के पाँचों महाभूखंडों में परिव्याप्त इस बृहद आख्यान का स्रोत एवं विभिन्न काल-खण्डों में, उस में उत्पन्न अनंत पाठों और व्याख्याओं का समीकृत ज्ञान प्राप्त हो जाए। कामिल बुल्के ने पहले-पहल इसके तीन पाठ –दाक्षिणात्य, गौड़ीय और पश्चिमोत्तरीय - माने हैं, और एकरूपता न होने का समर्थन किया है। (बुल्के, रामकथा - उत्पत्ति और विकास, 1962, 27-34).

मूल मानी जानेवाली वाल्मीकि रामायण में 24000 श्लोक, 500 सर्ग तथा 7 कांड हैं, जो विश्व का आदिकाव्य माना जाता है। वैदिककाल से इसके नाना रूपों में अनुरूपन, अनुकूलन व अनुकरण हो रहे हैं, जो देशकाल सीमा का अतिक्रमण कर रहे हैं। वाल्मीकि रामायण तथा जैन और बौद्ध रामायणों पर टिप्पणी करती हुई, प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता रोमिला थापर ने 2017 में यह मंतव्य व्यक्त किया कि रामायण के मूल पाठ पर गौर करना अपेक्षित है। मगर यह राय बीसवीं सदी के मध्य में ही कामिल बुल्के प्रकट कर चुके हैं। उन्होंने तीन पाठों की खोज भी की है।

वैदिककाल में रामायण के कुछेक पात्रों और घटनाओं का उल्लेख मात्र प्राप्त है। तब से लेकर अब तक राम-कथा-कथन की रीतियाँ : मौखिक, लिखित, शिल्प, नाट्य, चित्र, छायाचित्र, चलचित्र, वृत्तचित्र, भित्ति चित्र, संगीत, कथा-वाचन, लोककला असंख्य मिलती हैं। पुनर्सृजन, पुनर्कथन, कथावाचन, आख्यान, व्याख्यान, आशयानुवाद, मौखिक परंपरा, रंगभाष्य परंपरा, नृत्य एवं नृत्त, लोकाचार एवं लोककला के विविध रूप, आनुष्ठानिक पाठ एवं पठन, दृश्यांकन जैसे केरल की रामलीला, कथकली, रामनाट्टम एवं चमंडी-गुड़ियानाच, तैय्यम, छायानाट्य, मंदिरों में शिल्प व मूर्तियाँ, भित्तिचित्र, बुनाई, आभूषण-गहने, पेंटिंग, पाश्चात्य औपरे, बैले, नौटंकी, आदि बृहद रूपों में राम-कथा की स्वीकृतियाँ समय-समय पर विश्व के कोने-कोने में हो रही हैं। विश्व तुलनात्मक साहित्य में यह अमूल्य निधि है। हाल ही में, रामायण विश्वकोश को 200 खंडों में प्रकाशित करने की बृहद शोध परियोजना के अंतर्गत, अयोध्या शोध संस्थान के मुख्य संपादक डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह के द्वारा, इसके पहले खंड का लोकार्पण हुआ। यह प्रयास दुनिया के रामायण विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक पाठों की निर्देशिका एवं सूची मात्र है, इसलिए उत्सुकतापूर्वक इस शोध पत्र में दुनिया के पाँचों महाखंडों पर पनपते रामायण और रामचरितमानस के सांस्कृतिक अनुवादों पर विचार करना समीचीन होगा। कविवर तुलसीदास का मंतव्य यहाँ शिरोधार्य होगा कि नाना राम-अवतारों के रूप में करोड़ों रामायणों की सृष्टि होती है -

"नाना भांति राम अवतारा।
रामायण सत कोटि अपारा।''

-(रामचरितमानस, 32-3)

संत तुलसीदास ने रामचरितमानस में मध्यकालीन परिस्थितियों के अनुरूप अवधी भाषा में

27 श्लोकों, 4608 चौपाइयों, 1074 दोहों, 207 सोरठों, और 86 छंदों में, पुनःसृजित रामकाव्य रचा। उक्त मानस के रूपायन के लिए, रामनरेश त्रिपाठी द्वारा खोजे गए, ग्रंथों की संख्या 72 है। (सीपीवी, 2012, 96), जबकि तुलसीदास ने ही इसका संकेत दिया था (तुलसीदास, 1968, 1. श्लोक 7) मलयालम में सत्रहवीं सदी तक प्रकाशित एषुत्तच्छन का अध्यात्मरामायणम् किलिप्पाट्टु (शुकगीत) है, जिसका रचनाकाल 1500 ई. से 1600 ई. माना जाता है, और जिसका मूल 3643 संस्कृत श्लोकों से महर्षि रामानंद से रचा अध्यात्मरामायणम् है, जो इसका मौलिक प्रतिस्थापन माना जाता है।

विश्व के पाँच भूखंडों में रामायण

सतीशकुमरा हारित एवं चारुलता वेन्ना ने रामायण परंपरा का बृहद् तालाब एवं उसके खुले किनारे व आनुवंशिकता नामक आलेख में बताया है कि वाल्मीकि रामायण की निर्दिष्ट रचना के 800 साल में कई क्षेपक हैं। ओलिवा रॉय के अद्यतन आलेख, जो रामानुजन के तीन सौ रामायण....की सकारात्मक आलोचनात्मक स्वीकृति है, के सारांश में बताया गया है कि विश्व की 25 भाषाओं में रामायण उपलब्ध हैं।

विदेशी रामायणवेत्ताओं और आलोचकों से लेकर भारतीय विद्वानों तक रामायण और रामचरितमानस समेत कई राम कथा-कथन रीतियों का मनन करने के बाद वे मंतव्य निकाल रहे हैं, जो विश्व के पाँचों भूखंडों में भारतीय संस्कृति का प्रतीकांतर एवं संकेतशास्त्र का खज़ाना बनते जा रहे हैं (बुल्के, कामिल 1950; थापर, रोमिला 1989, रिचमैन, पौला 1991; धारवादकर, विनय 1999; वाद्ले, सूसन 1995; बोस, मंदाक्रांता 2002 एवं 2003; ग्रिफ़ित, रॉल्फ़, 2008; हकीम, रफ़ादी 2014; राय, ओलिवा 2017)। श्रीमती अनिता इसल्सका ने अपनी वेबसाइट में इसी रामायण की खूबियों को वाणीबद्ध किया है, आज वे सांस्कृतिक संश्लेषण (Cultural Synthesis) का साक्ष्य हैं। रामानंद सागर द्वारा निर्देशित रामायण दूरदर्शन धारावाहिक, अपने 78 उपाख्यान श्रृंखला में जनवरी 25, 1987 से जुलाई 31, 1988 तक भारत में दर्शाया गया था, जो मूल रामायण और रामचरिमानस का ही आभास पाठ बनकर पनपता रहा है, जिसे दुनिया की कई भाषाओं में अनुकूलित व मूल हिंदी में भी दर्शाया गया है। दुनिया के रामायणवेत्ताओं ने इसे गम्भीरता से लिया है।

यूरोप में रामायण

यूरोप में रामायण का प्रभाव, सबसे ज़्यादा बेल्जियम के फ़ादर कामिल बुल्के के भारतीय प्रवास से ही अंकित हुआ था। पोलैंड, इंग्लैंड, स्पेन, पुर्तगाल, फ़्रांस, इटली, नीदरलैंड, स्विट्ज़रलैंड, जर्मनी, रूस जैसे राष्ट्रों में रामायण प्रस्तुतियाँ होती रहती हैं, जो प्रत्येक देश की अपनी-अपनी ज़बान में होती हैं और कभी-कभी वहाँ के भारतीय दूतावास और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की विस्तार योजना के अंतर्गत भी होती हैं। यूरोप में भारत के तीन सांस्कृतिक केंद्र स्थापित हैं - लंदन का नेहरू केंद्र, जर्मनी का टैगोर केंद्र और स्पेन का भारत-भवन यानी कासा द ला इंदिया। ये तीनों समय-समय पर रामायण की कई प्रस्तुतियाँ, यहाँ तक कि दृश्यांकन, पेंटिंग, वृत्तचित्र, दूरदर्शन आधारित कार्यक्रम, सिनेमा, एवं नाट्यांकन, नृत्त-नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ करते हैं। स्पेन की ऐसी एक नाट्य प्रस्तुति में, शीर्षक : रामायण एक सवारी सौ रुपए (Ramayan : un viaje cien rupias) का विस्तार से उल्लेख हुआ है, जो यूरोप के कई राष्ट्रों में दर्शाई गई थी। (विजयकुमारन, 2012, 122-26)

बेल्जियम में रामायण

सन् 1935 में बेल्जियम के पादरी कामिल बुल्के ने भारत आकर डॉ. माताप्रसाद गुप्त के निर्देशन में 'रामकथा - उत्पत्ति और विकास' (1950) पर मौलिक शोध कार्य किया। उन्होंने आदिकवि वाल्मीकि को भाव

समर्पित करते हुए लिखा - "जिनकी प्रतिभा ने राम-कथा को भारत तथा निकटवर्ती देशों के साहित्य में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया और भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल प्रतीक बना दिया, उन आदिकवि वाल्मीकि को राम-कथा की दिग्विजय का प्रस्तुत विवरण सश्रद्धा समर्पित है।" कामिल बुल्के ने उपर्युक्त ग्रंथ में देश-विदेश में उपलब्ध रामायणों का कालक्रमिक विवरण भी दिया है, जिनमें संस्कृत के (43), बौद्ध और जैन रामायणों के (18), आधुनिक भारतीय भाषाओं के (43) एवं विदेशी रामायणों जैसे तिब्बत्ती (2), जावा (1), सिंहली (1), मलयाई (1), और कंबोदियाई (1) रामायण का अंकन है। मगर उन्होंने यूरोप और अमेरिका जैसे भूखंडों में तब तक होनेवाले रामायण अध्ययन पर ध्यान नहीं दिया था, उनका गहन शोध पूर्व एशियाई देशों तक सीमित था। बेल्जियम में इस पुण्यात्मा की स्मृति में रामायण से जुड़े अनेक सांस्कृतिक-साहित्यिक कार्यक्रम संपन्न होने लगे थे। वहाँ के राष्ट्रीय संग्रहालय में रामायण का एक आभासिक दृश्य प्रदर्शन हुआ, जो 17वीं से 19वीं सदी तक के 49 विभिन्न भारतीय पेंटिंग के संक्षिप्त रूपों से बना था, और जो रामकथा के क्लासिक, लोक और अनेक शैलीकृत चित्रों में रहे, जिनमें पहाड़ी पेंटिंग के अंतर्गत बशोली, चंबा, मंडी, गुलेर, नूरपुर, कांगड़ा, राजस्थानी शैली में जयपुर और बीकानेर, मध्य भारत की मालवा, ओरछा, दतिया, राघोघट आदि तथा बंगाली की दकानी एवं कालीघाट शैली का प्रयोग था। नवंबर 2013 से मई 2014 तक की लंबी अवधि तक यह प्रदर्शनी बेल्जियम की राजधानी ब्रेसिल्स में लगी रही। वहाँ अप्रैल 23, 2020 में रामायण से दो उपाख्यानों की प्रस्तुति का विवरण मिलता है। आगे चलकर अप्रैल 10, 2022 को रामनवमी और मई 10, 2022 को सीता नवमी मनाने की घोषणा वहाँ हो चुकी है। ज़ाहिर है कि यूरोप के श्रद्धालुओं को मद्देनज़र रखकर ही भारत में भी कम मनाई जानेवाली सीतानवमी जैसे अनुष्ठान की उद्घोषणा वहाँ हो चुकी है।

जर्मनी में रामायण

जर्मनी में 2018 में अनूदित एवं स्वतंत्र रूप से प्रकाशित होने वाली रामायण रॉल्फ़ थॉमस होचकिन ग्रिफ़ित की अंग्रेज़ी (1874) में वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। बोन स्कूल में रामायण पर भाषिक और दार्शनिक दृष्टि से अध्ययन संपन्न होने का उल्लेख भी है। भारत सरकार के सांस्कृतिक संबंध परिषद् की अधिकांश रामायण प्रदर्शिनियाँ जब-जब यूरोप के अन्य भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों में होती थीं, बर्लिन में भी अवश्य होती थीं। हाल ही में जर्मनी में 'अद्‌भुतरामायण - उत्तरकांड' के प्रकाशन की सूचना मिली है। जर्मनी में रामायण का संक्षिप्त रूप फ्रेडरिक रुकेरत ने प्रकाशित किया। म्यूनिख़ से प्रकाशित रामायण बालकांड का प्रकाशन जोसफ़ मेनराड (1897) के द्वारा हुआ था।

पोलैंड में रामायण

पाश्चात्य रामायण संस्करणों से पोलैंड में उन्नीसवीं सदी में रामायण का अनुवाद हुआ। अनुवादक किज़िज़ोव्स्की का कथन है कि उन्होंने बच्चों और आम आदमी को दृष्टि में रखकर रामायण का अनुवाद किया है, जिससे भारत की महान मिथकीय परंपरा की जानकारी हासिल हो जाए। इंडियन एक्सप्रेस दैनिकी में जुलाई 17, 2013 को छपी रिपोर्ट के मुताबिक पोलैंड में मूल भाषा संस्कृत से ही एक उच्च स्तरीय रामायण अनुवाद की अपेक्षा है।

इतालवी व फ़्रांसिसी रामायण

गसपरे गोर्रेसियो (1843-67) ने सात भागों में वाल्मीकि रामायण के पुनर्पाठ के रूप में, इतालवी रामायण लिखी। हिप्पोलित फ़ोचे (1854-1858) का दो भागों में संस्कृत रामायण का भी प्रकाशन हुआ। फ़्रांसिसी भाषा में ऑलफ्रेड रोसल (1803-1907) की रामायण भी उपलब्ध है। इन तीनों का प्रकाशन पैरिस में हुआ।

स्पेन में रामायण

स्पेनिश भाषा में वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस के कुल 17 प्रतिस्थापन व अनुकूलन उपलब्ध हैं। उनमें सेमियोटिक अनुवाद, अनुकूलन और प्रतीकांतर के काफ़ी नमूने पाए जाते हैं। कामेला यूलाते (1940; 1962), लोरा पाल्मा (1942), जॉन ग्विक्से (1945), जॉन जनेस (1952), जॉन बुर्ग (1963; 1970), जोस लूयिस गिमेनस (1984), लूयिस अलबर्ट (1998), कास्तिया एवं लयोन की कलाओं का शताब्दी प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित भारतीय सांस्कृतिक महोत्सव – चतुर्थ संगीत एवं रंगकला प्रदर्शन (2008), सर्गे डेमेत्री (2012), बार्सिलोना विश्वविद्यालय का वीडियो प्रदर्शन (2013), कतलानी भाषा (स्पेन की चार उपभाषाओं में एक) रामायण (2014), वालंसिया विश्वविद्यालय का, रोसर नगुरा का शोध - कोसल से बोलीवुड तक : दो हज़ार साल की रामायण यात्रा - एक सेमियोटिक अध्ययन (2017) आदि वाल्मीकि रामायण केंद्रित हैं, तो तुलसीदास के रामचरितमानस पर केंद्रित अनुवादों में एलेना देल रियो के दो (1998, 2006), जिनमें पहला आंशिक और दूसरा पूर्ण अनुवाद तथा 1981 का तीसरा अनुवाद भी दर्शाया जा सकता है। स्थानाभाव के कारण इनका अलग अध्ययन ही संभव है।

इंग्लैंड में रामायण

इंग्लैंड में रामायण का रंगभाष्य सोद्देश्य था, ताकि उससे दक्षिण एशियाई देशों और भारत की पीड़ित महिलाओं की आर्थिक सहायता हेतु चंदा इकट्ठा किया जा सके। सन् 1994 में निर्माता शोभा रामन ने इस प्रकार का एक रंगकर्म सजाया। ब्रिटिश लाइब्रेरी में रामायण पर प्रदर्शिनी भी हुआ करती है। भित्ति-चित्र, छाया चित्र और रंगचित्र इनमें प्रमुख हैं। 'तारा आर्ट्स थियेटर ग्रुप' ने ऐसी एक प्रदर्शिनी में रामायण के पात्रों की शिला-मूर्तियाँ भी लगायीं थीं, जिनको रामलीला की वेश-भूषा से सजाया गया और कृत्रिमता से बचा लिया गया था।

लंदन में अनगुस स्ट्रॉचन द्वारा करोडों डॉलर खर्च करके, एक फ़िल्म – Between Two Worlds - राम और सीता के आधार पर शेक्सपीयर की शैली में बनी थी। इंग्लैंड के कलामंडल की रामायण 'ब्लाक क्यॉट थियेटर' की प्रस्तुति ऐसा ही एक और कदम था।

गुटनबर्ग ई-बुक परियोजना के अंतर्गत ऑनलाइन समग्र वाल्मीकि रामायण का अंग्रेज़ी अनुवाद (1870-1874) रॉल्फ़ टी ह्वेच ग्रिफ़ित के द्वारा हुआ, जिसे 2008 में ई-बुक में परिणत किया गया। इसका जर्मन में पुन: अनुवाद हुआ। विलियम कारि एवं ज्योश्वा मार्शमैन का रामायण अनुवाद (1806-1810) एवं तीन भागों में अगस्त विल्हेम वोन श्लीगल ने आंशिक रूप से लैतिन अनुवाद (1829-1838) भी किया। मन्मथनाथ गुप्त (1891-1894) के सात भागों में वाल्मीकि रामायण के गद्यानुवाद उपलब्ध हैं।

रूस में रामायण

अविभक्त सोवियत संघ में रामायण के सशक्त स्वर बारान्निकोव थे, जो अब स्वतंत्र राष्ट्र उक्रेन के निवासी रहे हैं। उन्होंने रामचरितमानस का छंदानुवाद करके तुलसीदास की शैली का भी अनुकूलन किया है। प्राप्त सूचना के अनुसार वर्तमान रूस में प्रस्तुतियों के रूप में तीन रामायण मालाएँ आयोजित हुई थीं। अक्तूबर 10-11, 2016 और सितंबर 11-13, 2017 को यथाक्रम उनकी दूसरी और तीसरी प्रस्तुतियाँ हुईं।

अमेरिका में रामायण

यूनेस्को द्वारा 2005 में घोषित और 2008 से लागू मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में भारत की परंपरागत रामलीला को भी जोड़ लिया गया है।

अमेरिका भूखंड में यह कार्य प्रो. रोबर्ट गोल्डमैन व सेली सथरलैंड गोल्डमैन की संयुक्त रामायण अनुवाद परियोजना 1970 से चला। पौला रिचमैन (Richman,

1991, 24) ने ए. के. रामानुजन के आलेख – 'तीन सौ रामायण, पाँच उदाहरण और अनुवाद के तीन सिद्धांत', का उल्लेख करते हुए, रामकथा की अनंत कथन-शैली को निरूपित करती हुई, पाश्चात्य भाषाओं को छोड़कर, दक्षिण एशिया में ऐसी 23 भाषाएँ हैं, जिनमें रामकथा समय-समय पर अंकित हुई है, श्री ए. के. रामानुजन ने रामकथा पर रामायणविदों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर केंद्रित 12 आलेखों का संपादन कर, अपनी विस्तृत टिप्पणी, विषयसूची (अंग्रेज़ी के अक्षर-क्रम में) के साथ 275 पृष्ठों में, अपने ग्रंथ 'कई रामायण' का प्रकाशन किया है। वह अंग्रेज़ी में रामकथा विषयक उल्लेखनीय दस्तावेज़ बन गया है। बाद में चलकर, ओलिवा राय ने भी ए.के. रामानुजन के उपर्युक्त किताब के समानार्थ सामग्री पेश की है।

ब्लूमिंगटन से प्रकाशित पौला रिचमैन (2008) की संकलित व संपादित कृति 'आधुनिक दक्षिण भारत की रामायण कथाएँ : एक एंथोलॉजी' है। उन्होंने 22 आलेखों को 'यह किसका रामायण है?' में भूमिका बाँधकर तीन भागों में -पहला सीता संदर्भित, दूसरा लांछित पात्र और तीसरा राक्षस कहलाने वाले तथा उपसंहार में अतिकथा (मेटानैरेटिव) में 'जिज्ञासाएँ किसको नहीं होती हैं?' प्रकरण में वेलचेरु नागेश्वर राउ द्वारा अनूदित तेलुगु स्त्रियों के लोकगीत समेत लक्ष्मण परिहास जैसे उपशीर्षक में मिलाकर, फिर परिशिष्ट में शब्दावली, संदर्भ ग्रंथ, योगदान कर्त्ताओं की सूची व विषय सूची के साथ विस्तार से समाहित किया गया है।

ऐसी अनेक अनुबंध-रामायण 20वीं व 21वीं सदी में लिखी गईं, जिनके विदेशी या देशी रामायण-भाष्यकार उसके मूल से दूर होते दिखाई देते हैं। रामायण का अपसंस्कृतिकरण ही ऐसे आलोचकों के सिर पर सवार होता है। अमेरिकी विद्वान वेन्नी डोनिगर की भूमिका के साथ ए.के. रामानुजन के संकलित निबंधों (सं.1999, 2001, 2004, 2006) पर लगी सारी टिप्पणियाँ और दिल्ली विश्वविद्यालय का आक्रोश, उक्त लेखक की ऐसी शोध दृष्टि से उद्‌भूत हैं, जबकि उनके पहले की संकलनकर्ता पौला रिचमैन (1988, 1991, 2001, 2007, 2008, 2014, 2021) के भारतीय रामायण व धर्म से जुड़े संकलनों पर इतनी आपत्ति नहीं उठी थी।

अमेरिका में रामायण की अंतःपाठ्यता के तीन अवतरणों को दिल्ली की शोधार्थी दीपाली माथुर द्वारा आलोच्य बनाया गया है। पाश्चात्य देशों के स्त्री-विमर्श की कोटि में आनेवाले वे तीनों आगे चलकर रामानुजन के बहुचर्चित आलेख का स्रोत भी बने। अमेरिकी कोमिक स्ट्रिप नीना पाले की 'सीता सिंग्स द ब्लूस' जैसी एनिमेशन फ़िल्म, अलिसन अरकल स्टोकमैन का 2010 में निर्देशित 'रामायण रंगभाष्य' और संजय पाटिल की सचित्र विवरण पुस्तक 'रामायण : डिवाइन लूफ़ॉल्स' जैसे तीनों में, रामायण को पश्चिमी संस्कृति में व्याख्यायित करने का प्रयास रहा। पाश्चात्य संस्कृति में भारतीय संस्कृति को स्थापित करने के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपक्रम में, इन तीनों को 'जाकि रहि भावना जैसी, प्रभु मूरति देखि तिन तैसी' कथन से तुलसीदास का समाधान ही काफ़ी होगा। जनसत्ता की ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका के एक प्रमुख हिंदू समूह ने वहाँ के विश्वविद्यालयों से 'हिंदुत्व का खंडन' सम्मेलन प्रायोजित नहीं करने और वैश्विक हिंदुत्व को समाप्त करना विषय पर प्रस्तावित ऑनलाइन सम्मेलन को समर्थन न देने का आग्रह किया गया है।

मैकल मधुसूदन दत्त (1861) के 'मेघनाथ-बध काब्या' (बंगाली) के दो अंग्रेज़ी अनुवाद उपलब्ध हैं। इस मूल काव्य को अंग्रेज़ी उपनिवेशीकरण की उपज के रूप में माना जाता है, जहाँ मेघनाथ, रावण जैसी आसुरी शक्तियाँ राम जैसे सम्राज्यवादी के खिलाफ़ लड़ते हुए शहीद होती हैं। अनुवादक क्लिंटन बी सीले ने अपनी रचना के शीर्षक में ही इसे सूच्य बनाया है। मगर शोधार्थी अभय कुमार रॉय ने मेघनाथ वध काव्य को राष्ट्रीय अवबोध जगाने लायक माना है।

अमेरिका भूखंड के अन्यान्य देशों में और गिरमिटिया देशों में रामायण

सत्रहवीं सदी से अंग्रेज़ों ने भारतीयों को गिरमिटिया बनाकर दक्षिण अमेरिका, कैरीबियाई द्वीप, दक्षिण अफ़्रीका, मॉरीशस आदि देशों में अनुबंध के अंतर्गत यहाँ बुलाया था। अधिकांश का अवलंबन रामायण या रामचरितमानस था। तुलसीदास पर अमेरिकी संगोष्ठी में यह आँखों देखी प्रस्तुति बहुतों के द्वारा हुई थी। (विजयकुमारन, 2012, 95-106) फ़िजी, ब्रिटिश गयाना, डच गयाना, त्रिनिदाद, टोबेगो, नेटाल (दक्षिण अफ़्रीका), मॉरीशस आदि देश इसके साक्षी रहे। रामायण स्कूल द्वारा बच्चे, माता-पिता व अध्यापकों हेतु छः दिवसीय रामायण लीडरशिप कार्यशाला ज़ूम प्लैटफ़ॉर्म में कैरीबियाई देशों, कनाडा और अमेरिका में पिछले साल सक्रिय रूप में चली थी, जो अटलांटिक समुद्र पार के रामायण संज्ञान को बढ़ाने लायक बनीं। इन शैक्षिक-सांस्कृतिक पाठों को अन्यत्र भी देखा जा सकता है। ज़ाहिर है कि रामायण के सेमियोटिक अंतरण में गिरिराज किशोर का लिखा हिंदी उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' का अभूतपूर्व योगदान है।

अफ़्रीकी महाखंड और मॉरीशस में रामायण

गिरमिटिया देश दक्षिण अफ़्रीका में अधिकांश उत्तर भारतवासियों के द्वारा तथा गांधी जी के होते, कई राज्यों में रामायण यानी रामचरिमानस का प्रचलन खूब हुआ। रामनवमी एवं दीवाली मनाते हुए वहाँ 1860 से 1910 तक के निवासी ही डरबन में मानस पाठ किया करते थे। आंध्र से उत्प्रवासित वहाँ के हिंदू त्यागराज और भद्राचल रामदास कीर्तन करते रहे। वाल्मीकि रामायण को नृत्य नाटक के रूप में प्रस्तुत करते थे। पौला रिचमैन चार प्रसंगों को उठाकर वर्ण संकरता से बचने के राममंत्र अवलंबन की दक्षिण अफ़्रीकी विधियाँ समझाती हैं। उसी प्रकार वहाँ के रामायण-दृश्यानुकूलन की बात भी करती हैं।

मॉरीशस में ही विश्व का पहला रामायण केंद्र 2001 में वहाँ के सरकारी संरक्षण में खोला गया है, जो गिरमिटिया देश के रामायणादि के अस्तित्व को आज भी बरकरार रखता है। प्रस्तुत केंद्र में तुलसी जयंती ही नहीं, रामचरितमानस संगीत, दृश्य-श्रव्य अवतरण भी हुआ करते हैं।

ऑस्ट्रेलिया महाखंड एवं दक्षिण पूर्व एशिया में रामायण

ऑस्ट्रेलिया के मेल्बर्न विश्वविद्यालय की एशिया नेटवर्क एक्सचेंज पत्रिका में रामायण का स्थानीय भाष्य छपा था। हिंदुओं का दक्षिण और पूर्व एशियाई देशों में 8वीं सदी से उपनिवेशीकरण हुआ था।

एशिया में रामकथा की स्वीकृति 2500 सालों से हिंदू से गैर-हिंदू धर्म और समाज में भी हो गयी है, यही स्थिति 21वीं सदी तक दुनिया के अन्य भूखंडों में भी है। अंततोगत्वा रामायण 'बहुविध उदाहरणों की विधा है' (Roy, 2017, 90)। ए. के रामानुजन के आलेख में पाँच राम कथा-कथन रीतियों के चुने हुए प्रकरणों से रामायण के थाइलैंड, तिब्बत्त, म्यांमार, लावोस, चीन, कंबोदिया, मलेशिया, जावा और इंडोनेशिया आदि राष्ट्रों में से थाई रामकीर्ति या रामाकियान को थाइलैंड की जनता पर पड़े प्रभाव दिखाने हेतु चुना है। रामाकियान के मुताबिक राम की राज-परंपरा में एक-एक ने रामायण की रचना में भाग लिया और मानव, राक्षस और वानर जैसे तीन प्रकार के पात्रों को उसमें प्रमुखता दी। रावण को एक वीर नायक के रूप में लिया गया, और रावण की पराजय सबके दुख का कारण बनती दिखाई गई है। इंडोनेशिया, फ़िलिपीन, मलेशिया, आदि देशों में रामायण मुस्लिम संस्कृति के अनुरूप ढाली गई है।

भारत में रामायण

संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं की रामायणों में दो प्रकार का अंत मिलता है - एक में राम द्वारा रावण के वध के उपरांत सीता समेत अयोध्या लौटना और दूसरे में सीता को प्रजावत्सल राम द्वारा चरित्रहीनता

का आरोप लगाकर वन में छोड़े जाने पर वाल्मीकि द्वारा पालित होकर उनके दो बच्चे लव और कुश के द्वारा राम से पुनर्मिलन का अवसर आते ही सीता का धरती में समा जाना। यहाँ तक कि वाल्मीकि रामायण के प्रथम बालकांड और सातवें उत्तरकांड में क्षेपक मानने वाले विद्वान भी हैं।

भारत में रामायण के सांस्कृतिक अनुवाद की परंपरा अभिनव गुप्त के नाट्यशास्त्र के भाष्य (ई. पू. दूसरी सदी), हरिवंश पुराण (पहली शताब्दी) आदि में भी प्राप्त होती है। रामानुजन के अनुसार रामायण सांस्कृतिक धरातल की दूसरी भाषा है तथा एक असाधारण वाकपटु भाषा है। अरोविला, पुतुच्चेरी के व्याख्यान में विदुषी रामिला थापर ने रामायण को इतिहास के एक प्रकरण के परे, काल, देशातीत अनेक आख्यानों का संगुंफित इतिहास कहा, यानी इसे खुद का इतिहास बताया है।

जैन परंपरा में विमल सूरी के 'पउम चरिउ' के अनुसार राम, लक्ष्मण, सीता आदि जैन रहे, जो जैनों के 63 पैगंबरों की परंपरा में जन्मे थे। सीता को वहाँ रावण पुत्री घोषित किया। बौद्ध जातक कथा में, दशरथ जातक परंपरा में सीता को दशरथ की बेटी बताया गया है। बंगाल के लोकगीत चंद्रमती रामायण में सीता मंदोदरी की बेटी है। रामगौड़ द्वारा खोज निकाली कन्नड़ लोक रामायण में सीता रावण से पैदा हुई, क्योंकि रावण ने शिवजी द्वारा दिए गए फल को खाया था। अतः इन सारी भारतीय परंपरा में सीतायन (रामायण का अपर) रचे जाने का अनुपम स्रोत निहित है।

रामनामियों के निमित्त तमिल कवि कंबन (1180–1250) 'इरमावतारम्' में कई उद्धरणों को प्रस्तुत करते हुए, भगवान और भक्त के बीच के जटिल संबंध व्यक्त करते हैं। माइकल मधुसूदन दत्त रचित बंगाली रामायण में सांस्कृतिक उभयवादिता के उपनिवेशवादी असमंजस को प्रकट करने की क्षमता है, जो थाई राजाओं को राजनैतिक वैधता की शब्दावली प्रदान करता है। तेलुगु ब्राह्मण महिलाओं का पति की उपेक्षा के बारे में बहस करने का तरीका उक्त भाषा में है। ई.वी. रामस्वामी को तमिल में रावण की स्थिति से जूझकर अलगाववाद के विवाद को खड़ा करने में, वह भाषा सक्षम है। (रिचमैन, 1991, 14-15)

कामिल बुल्के (बुल्के, 1962, 153-260) ने 1950 तक संस्कृत धार्मिक साहित्य में राम-कथा के अंतर्गत हरिवंश, महापुराण, उपपुराण और सांप्रदायिक रामायण में योगवशिष्ठ, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनंद रामायण, तत्वसंग्रह रामायण, कालनिर्णय रामायण और गौण रामायण तथा अन्य धार्मिक साहित्य की खोज में जैमिनी भारत, सत्योपाख्यान, धर्मखंड, हनुमत्संहिता, बृहत्कोशल खंड के साथ-साथ परिशिष्ट में हिंदुत्व में उल्लिखित संस्कृत रामायणों का ब्यौरा दिया है। उन्होंने ललित साहित्य में रामकथा प्रकरण में रघुवंश, रावणवध (सेतुबंध) अथवा भट्टिकाव्य, जानकीहरण, अभिनंदनकृत रामचरित, रामायण-मंजरी तथा दशावतारचरित, उदार राघव, जानकी-परिणय, रामलिंगामृत, राघवोल्लास, रामरहस्य को खोज लिया तथा नाटकों में प्रतिमानाटक तथा अभिषेक नाटक, महावीरचरित तथा उत्तर रामचरित, उदात्तराघव, कुंदमाला, अनघर्राघव, बालरामायण, महानाटक, आश्चर्यचूड़ामणि और अप्राप्य प्राचीन नाटक, प्रसन्नराघव, उल्लाघराघव, गौण नाटक और उत्तरकालीन नाटक पर उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने स्फुट काव्यों में श्लेष-काव्य, नीतिकाव्य, विलोमकाव्य, चित्रकाव्य, श्रृंगारिक खंडकाव्य और अन्य स्फुट काव्य को भी खोजा। कथा साहित्य भी उक्त प्रकरण में जोड़ दिया। आधुनिक भारतीय भाषाओं में राम-काव्य के अंतर्गत तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ और आदिवासी कथाएँ-द्रविड़ भाषाओं में प्राप्त राम-कथा जैसे उपाध्याय बन गए। इससे सर्वविदित है कि बीसवीं सदी के पूर्वार्ध तक यह ग्रंथ राम-कथा अनुसंधान की अमूल्य निधि बने तथा बीसवीं सदी के उत्तरार्ध तथा इक्कीसवीं सदी के राम विषयक लोककाव्य और अन्यान्य ही नए अनुसंधाता और आलोचकों के लिए मार्गदर्शी।

भारत में मुगल शासन में उर्दू और फ़ारसी में

रामायण के अनुवाद भी प्रभावाध्ययन के स्रोत हैं। अकबर के अनुरोध पर अलबदायूनी द्वारा वाल्मीकि रामायण के पद्यानुवाद एक उदाहरण है। भारत के प्रत्येक राज्य में नेपाल, भूटान आदि में रामायण प्रस्तुतियों पर लिखना गागर में सागर भरने के समान है। केरल के उल्लेखनीय साहित्यिक अनुकूलन के रूप में हाल ही में आनंद नीलकंठन की अंग्रेज़ी रचनाएँ – Valmiki's Women (July 2021) रामायण की स्त्रियों पर विमर्श हैं, तो Asura : Tale of the vanquished (2013) रावण को मद्देनज़र रखकर रची अद्यतन रामायण इसकी कड़ी है। ये कदम ए. के. रामानुजन की दृष्टि का ही विस्तार माने जा सकते हैं। ऐसे अनेक प्रति रामायण और प्रस्तुतियाँ भारत में ही क्यों विश्व में कहीं गरम-गरम रोटी के रूप में बिक जाते हैं, उनका पुनरीक्षण करके भारत को सांस्कृतिक संकट से बचाना भी ज़रूरी है।

केरल में सहजतः "माप्पिलरामायण" (मुसलमानी रामायण) हसनकुट्टी पिरांतन (पगला) को सुनकर टी.ह्वेच. कुंञिरामन नंबियार ने इसे संपादित किया। एक शोध परियोजना में प्रो. एम.एन. कारश्शेरी ने इसका पहला संस्करण (जुलाई 22, 1976, 95-99) में और द्वि. सं. 1989 में, केरल मलयालम प्रकाशन के द्वारा निकाला। इसी के आधार पर जॉन रिचर्डसन के अनुवाद के साथ पौला रिचमैन के संकलन में इसे शामिल किया गया। वीरगीतों की परंपरा में केरल में कई सिद्धपुरुषों पर गायन, प्रत्येक समुदाय के गायकवृंद करते थे, वैसे ही प्रस्तुत गीत के उपक्रम में, इसे मुसलमानी सिद्धपुरुष औलिया के मुँह से निकला गीत बताया गया। 'रामायण' उनकी ज़बान में 'लामायण' बना। पहला अनुच्छेद, अंग्रेज़ी किताब से उद्धृत किया जा रहा है, मगर खेद की बात है कि मलयालम लोकगीतों का शब्दार्थ-ध्वनि-सौंदर्य कहाँ अंग्रेज़ी में अनुकूलित होगा? -

"The song that the bearded saint sang long ago, / The narrative song seen as this, our *Lamayana* / The song of our squatting idle, in our long wait through [the month of] *Karkadakam,* / The song we will croon, stopping our ears with our fingertips / The song of Dasharatha having married three women" (Richman, 2008, 195)

लामलामलामलाम (जिसे रामरामराम....के अनुकूलन से गीत प्रवेशक में, जो कई बार तुक लगाया जाता है), वही इसका मंगलाचरण है।

केरल की सबसे ज़्यादा जनजातियों की आवासभूमि, वयनाडु की रामायण-जनवादी परंपरा में डॉ. असीस तरुवना के द्वारा अडियरामायण और चेट्टिरामायण (एक पिछड़ी जनजाति और दूसरा पिछड़ी जाति की भेंट) की खोज हुई, जो रामायण के लौकिक अनुकूलन और प्रतिस्थापन हैं। ये जनजातियाँ जैसे दलित और पीड़ित हैं, वैसे ही उनकी प्रतिरक्षा देवियों के सामने मुकदमा चलाकर, राम के सीता त्याग को खंडित करते हुए, उन्हें दोषी ठहराने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। आज भी वयनाडु में कई स्थलनाम और आचारानुष्ठान, जंगली मूर्तियाँ व चिह्न, इन बातों की पुष्टि करने लायक हैं। जैसे भी हो, अन्यत्र इस पर गहन शोध हो सकता है। अस्तु,

निष्कर्ष

तुलसीदास के ही वचनों से इस प्रकरण को समाप्त करना समीचीन होगा –

"श्रोता वक्ता ग्याननिधि, कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीव जड़, कलि मल ग्रसित विमूढ़।।"

टिप्पणी :

1. "Few works of literature produced in any place at any time have been as popular, influential, imitated and successful as the great and ancient Sanskrit epic poem, the Ramayana," says Robert P Goldman, professor of Sanskrit and Indian studies, University of California, Los Angles.

Though India is the home land of the Ramayana it now belongs to the entire world and is a unique, social, cultural, spiritual, philosophical and literary treasure of the mankind – Arhter J Pais, ***Indian Epic, Universal Resonance,*** October 23, 2008, 23:28 IST . https://www.rediff.com/news/2008/oct/23ia.htm
2. Staff reporter, The Hindu, - 'Serious attention should be paid to Valmiki's Ramayana, Buddhist and Jaina versions'- Romila Thapar. Thursday 17 February 2011 http://www.hindu.com/2011/02/17/stories/2011021759721100.htm
3. https://cgimunich.gov.in/public_files/assets/pdf/The-Global-Encyclopaedia-of-the-Ramayana_full-Interactive.pdf (August 2020, Pp.179.)
4. Tulsidas (2011), *Sri-Ram-Charita-Manas: A Romanised edition with English Translation*. Gorakhpur, Geetha Press: second reprint. P. 45.
5. http://impressions.org.in/jul13/ar_skharitcv.html
6. *EPRA International Journal of Multidisciplinary Research (IJMR)* ISSN (Online): 2455-3662, Volume: 3 | Issue: 7 | July 2017, P. 86.
7. "For millennia since its authorship the tale has been told and re-told through poetry, dance-dramas, shadow puppetry, illustrations and more recently, film. While British Library's exhibition focuses on the seventeenth-century manuscripts, it also gives a sense of the diversity of the story's telling through film posters, illustrated ganjifa cards and sculptures." www.untoldlondon.org.uk/news/ART57739.html
8. फादर कामिल बलु के, 1962, राम-कथा : उत्पत्ति आरै विकास, प्रयाग, हिंदी परिषद प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, समर्पण, द्वितीय सं.पृ.8.
त्‌ वही, वही, परिशिष्ट, पृ. 751- https://twitter.com/IndEmbassyBru/status/1384836784899731457
9. August Schlegel (1767 - 1845), translator of the Rāmāyaṇa, is the first of the Indologists of the Bonn School. They are followed by Christian Lassen (1800 - 1876); Hermann Brockhaus (1806 -1877); Martin Haug (1827-1876); Theodor Aufrecht (1821 - 1907) and Hermann Jacobi (1850- 1937).
10. https://de.wisdomlib.org/definition/adbhutaramayana
11. https://www.todaytranslations.com/news/indian-epic-the-ramayana-translated-into-polish/
12. Ralph T H Griffith, 2008, The Ramayan of Valmiki. Release Date: March 18, 2008 [Ebook 24869]. Pp. 1960..
13. http://www.gutenberg.org/license
14. https://www.iccr.gov.in/cultural/incoming-cultural-delegations
15. https://ich.unesco.org/en/RL/ramlila-the-traditional-performance-of-the-ramayana-00110
16. Oliva, Roy, Exploring The Journey Of The Ramayana Across Different Cultures And Languages: A Critical Study Of A. K. Ramanujan's Three Hundred Ramayanas EPRA International Journal of Multidisciplinary Research (IJMR) | ISSN (Online): 2455 -3662 www.eprajournals.com Volume: 3 | Issue: 7 | July 2017, 87-88.
17. Paula Richman, compiled and ed: 2008, *Ramayana Stories in Modern South India: An Anthology*, Indiana University Press, Bloomington. Pp.

288.
18. Paula Richman.ed.(1991) *Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia;* (2001) *Questioning Ramayanas: A South Asian Traditio;* (2014) *Ramayana Stories in Modern South India: An Anthology on Anthology;* (2007)*The Crisis of Secularism in India;* (1998) *Women, Branch Stories, and Religious Rhetoric in a Tamil Budhist Text (Foreign and Comparative Studies, South Asian Series;* (2008) *Extraordinary Child: Poems from a South Indian Devotional Genre;* (2021) *Performing the Ramayan Tradition, Enactment, Interpretation and Argument.*
19. Dipali Madhur, 2015, *Making The Ramayana Relevant: Some Thoughts On Modern Adaptations In 21st Century America*, **International Journal of English Language Literature and Humanities,** Vol.II, Issue X, February, Pp. 199-209.
20. - http://www.ijellh.com
21. *Janasatha,* New Delhi, August 21, 2021. (report Washington 21 August (Bhasha). P.2.
22. Michel Madhusoodana Datta, 1861, Meghanath Badh-Kabya, transl. *The Slaying of Meghanada: A Ramayana from Colonial Bengal,* Clinton B. Sheely, 2004., OUP. &Michel Madhusoodana Datta, Meghanath Vadh, transl. (2010) *The Poem of the killing of Meghanad,* William Radice, , Penguin India.
23. *IJRAR- International Journal of Research and Analytical Reviews,* Volume 5, Issue 3 , July – Sept 2018, p.111 y.
24. गिरिराज किशोर, 1999, गिरमिटिया, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 903. http://www.abhivyakti-hindi.org/aaj_sirhane/2005/pahla_girmitiya.htm
25. Richman, Paula, 2001. *Questioning Ramayanas, a South Asian Tradition. Berkeley,* CA: university of California Press and New Delhi: Oxford university Press**Ways of Celebrating Ram's Birth, -** Paula Richman (19-01-2010.)
26. https://journal.equinoxpub.com/ROSA/article/view/11257
27. Countless Ramayanas: Language and Cosmopolitan Belonging in a South Asian Epic, June 2014, ASIANetwork Exchange A Journal for Asian Studies in the Liberal Arts 21(2):4
28. https://www.coursera.org/unimelb)-Australia,university
29. Cited in the book - Richman, Paula, editor.1991 *Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia.* Berkeley: University of California Press, 1991, 14.
30. http://ark.cdlib.org/ark:/13030/ft3j49n8h7/
31. Romila Thapar, **"The Ramayana Syndrome,"** *Seminar*, no. 353. a lecture at the 'Ramayana' festival, organised by the Adishakti Laboratory of Theatre Arts Research at Auroville, Puducherry (January 1989).
32. Richman, P. 2008. *Ramayana Stories in Modern South India: An Anthology*. Bloomington: Indiana University Press. Pp. 195-200..
33. Tulsidas (2011), *Sri-Ram-Charita-Manas: A Romanised edition with English Translation.* Gorakhpur, Geetha Press: second reprint. P. 41.

संदर्भ :

34. Bose, Mandakranta, ed: 2004, *The Ramayana Revisited*, OUP, New York.
35. Diwali,' 2005. 'Looking In, Looking Out: A Journey to the Source.' Episode 18. Di Rosen Productions for the South African Broadcasting Corporation. Transmitted 6 November.
36. Gandhi, M[ohandas] K. 1972 (1927 rprt). *An Autobiography or the Story of my Experiments with Truth*. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.

— 1928. *Satyagraha in South Africa*. Ahmedabad: Navajivan Press.

37. Krishnamoorthy, K. 1993. *A Critical Inventory of Ramayana Studies in the World.* Delhi: Sahitya Akademi. 2 Vol.
38. Ludvik, C.1997. *Hanumān in the Ramayana of Valmiki and the Ramacaritamanasa of Tulsi Dasa*. Delhi: Motilal Banarsidass.
39. Pandit Radhesyam Kathavacak**,** 1960, ***Sriramkatha (Radhesyam Ramayan),*** Bareli: Sri Radhesyam Pustakalay.Pp.
40. Richman, P. 2008. *Ramayana Stories in Modern South India: An Anthology*. Bloomington: Indiana University Press. Pp. 288.
41. --2001. *Questioning Ramayanas, a South Asian Tradition*. Berkeley, CA:
42. University of California Press and New Delhi: Oxford university Press.
43. Roser Noguera Mas, 2008, *De Kosala A Bollywood: Dos Mil Años Contando Historias. Un Estudio Semiótico Del Ramayana,* Universidad de Valencia. Pp.606.
44. उद्धृत सीपीवी, विजयकुमारन, 2012 रामचरितमानस और सांस्कृतिक अनुवाद, नई दिल्ली, सार्थक प्रकाशन, पृ. 96.
45. सुधाकर पांडेय संपा. 1972 रामचरितमानस : साहित्यिक मूल्यांकन, नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ. 49.
46. वाद्ले, सूसन एवं. राममूर्ति, प्रीति, संपा, 1995, Spotlight on Ramayana: An *Enduring Tradition,* New York, American Forum for Global Educaiton.
47. Vinay Dharwadker, E. G., Gen. (Ed), 1999. *The Collected Essays Of A. K. Ramanujan*, Oxford University Press. Pp. 329.

थीसिस :

Roser Noguera Mas & Dra. Antonia Cabanilles Sanchis, *De Kosala A Bollywood: Dos Mil Años Contando Historias. Un Estudio Semiótico Del Ramayana*, VALÈNCIA, Universitat De València, 2007.(print)

फादर कामिल बुल्के 1950. राम-कथा : उत्पत्ति और विकास, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग, द्वितीय संस्करण 1962. पृ. 856..

आलेख सार:

International conference on Tulsidas and his Works, Miami, Florida, USA, November 26-28, 1999.

विश्वजाल एवं ई सामग्री

Abhay Kumar Roy, July 13, 2018, **Retelling the Ramayana: Meghnadbadh Kabya and the Dawning of a National Consciousness,** *IJRAR*- *International Journal of Research and Analytical Reviews,* Volume 5, Issue 3 , July – Sept 2018. http://ijrar.com/

Artforum International Magazine Inc. 1995, (Artforum v.33, n.7 (March, 1995:80-84)

The Course on Many Ramayana, Australia, University of Melbourne cited: *https://www.coursera.org/unimelb*

Roy, Oliva. (2017), *Exploring The Journey Of The Ramayana Across Different Cultures And Languages: A Critical Study Of A. K. Ramanujan's Three Hundred Ramayanas, EPRA International Journal of Multidisciplinary Research (IJMR)* ISSN (Online): 2455-3662, Volume: 3 | Issue: 7 | July 2017, 87-88.

Hakim, Rafadi, *Countless Ramayanas: Language and Cosmopolitan Belonging in a South Asian Epic* ASIANetwork Exchange | *Spring* 2014 | volume 21 | 2.

Ramayana in Different Countries, cited: *lordrama.co.in/ramayana-in-different-parts-of-the-world.html*

Tehelka. 2011 *"**Ramayana Ruckus: Which Version of the 'Ramayana' would Ram Read?"*** Edited by Arpit Parashar and Viswajoy Mukherjee. October 24.. *https://communalism.blogspot.com/2011/10/which-version-of-ramayana-would-ram.html*

Samhita Arni, 2011 *The Many True Kandas***,** Oct 23 2011, 03:30 hrs New Delhi: *https://communalism.blogspot.com/2011/10/ramayaana-is-continuing-many-sided.html*

Philip Lutgendorf, 2007 *Hanuman's Tale: The Messages of a Divine Monkey*. New York: Oxford University Press, Pp 434. .

https://www.cambridge.org/core/journals/journal-of-asian-studies/article/abs/hanumans-tale-the-messages-of-a-divine-monkey-by-philip-lutgendorf-new-york-oxford-university-press-2007-xiv-434-pp-12500-cloth-3000-paper/A20739BAB61518064F80D45BCDA5586E

E. G., Vinay Dharwadker & A. K. Ramanujan, *The Collected Essays of A. K. Ramanujan*, *Journal of the American Oriental Society* 121 (3):537 (2001)

http://impressions.org.in/jul13/ar_skharitcv.html

www.untoldlondon.org.uk/news/ART57739.html

www.hindustantimes.com/StoryPage/StoryPage.aspx?sectionName=& id=e625c..

www.nagamas.co.uk/content/view/29/23/

www.blackcat-theatre.co.uk/Ramayana.html

www.goldenpages.com/hotspots/rama/rama.htm

http://www.sacred-texts.com/hin/rama/index.htm (2-03-07).

http://www.sacred-texts.com/hin/dutt/index.htm (01-23-07).

hindi.vijay@gmail.com